उपसंहार

उपसंहार

मेरे लघु-शोध प्रबन्ध का विषय है 'कमलेश्वर की कहानियों में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन।' इस लिए 'महानगर' की संकल्पना को समझे बिना किसी भी साहित्य में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन का सही मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। इसी लिए मैं ने प्रथम अध्याय में महानगर शब्द की व्युत्पत्ति, महानगर की परिभाषा, महानगरीय समुदाय के लक्षण, महानगरों की उत्पत्ति और विकास, महानगरों में होनेवाली समस्याएँ आदि बातों का विवेचन किया है।

महानगर शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है। अंग्रेजी में इसके लिए 'Metropolis' यह शब्द प्रचलित है। प्रारंभिक काल में इस महानगर शब्द का अभिप्राय 'मातृनगर' से था। दसलाख से अधिक आबादीवाले तथा आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय महत्व रखनेवाले शहर को 'महानगर' कहते हैं। महानगरों की उत्पत्ति और विकास एक ओर जनसंख्या से संबंधित है, तो दूसरी ओर उद्योग और व्यापार के केन्द्रीकरण पर निर्भर रहता है। महानगरों के विकास के कारण इस प्रकार है ---

१) व्यापारिक क्रान्ति
२) कृषि क्रान्ति
३) औद्योगिक क्रान्ति
४) आवागमन के साधन
५) राजनीतिक कारण
६) शिक्षा केन्द्र
७) नगरीय सुख सुविधायें आदि।

महानगरीय समुदाय के लक्षण निम्नांकित होते हैं ---

१) सामाजिक विजातीयता
२) माध्यमिक नियंत्रण
३) सामाजिक गतिशीलता
४) व्यक्तिकता
५) सामुदायिक भावना का अभाव
६) नैतिक शिथिलता
७) अपराधी वृत्ति
८) पारिवारिक एकता का अभाव
९) सामाजिक विघटन
१०) विषमता
११) कृत्रिम जीवन आदि।

महानगर में प्रमुख रुप से दिखायी देने वाली समस्याएँ इस प्रकार है --

१) बेकारी २) अत्याधिक भीड-भाड और गन्दी बस्तियाँ

३) वेश्यावृत्ति ४) भिक्षा वृत्ति

५) अपराध की समस्या आदि।

उपरलिखीत बातों से हम यह जान जाते है कि महानगर का स्वरुप क्या होता है ? उसकी उत्पत्ति और विकास कैसे होता है ? उसके लक्षण क्या है ? उसकी कौनसी समस्याएँ होती है।

दूसरे अध्याय में मैंने कमलेश्वर की महानगरीय जीवन से संबंध रखनेवाली सभी कहानियों का संक्षिप्त परिचय देने की कोशिश की है। ऐसा करते समय मैंने कमलेश्वर के सभी कहानी संग्रहों को गहराई से पढकर जो कहानियाँ मेरे शोध-प्रबन्ध से संबंधित है, उनका संक्षिप्त में परिचय कराया है। कमलेश्वर की महानगरीय जीवन से संबंधित कहानियाँ और उनकी विशेषताएँ इस प्रकार है ---

कहानी संग्रह --	कहानियाँ --
१) राजा निरबंसिया	- `सुबह का सपना`
२) बयान तथा अन्य कहानियाँ	`लाश`, `जोखिम`, `बयान`, `आसक्ति`, `उस रात ... निकला था`, `मैं`, `अपना - एकांत`, `अजनबी`।
३) खोयी हुई दिशाएँ	- `खोयी हुई दिशाएँ`, `जॉर्ज पंचम की नाक`, `दिल्ली में एक मौत`, `एक थी विमला`, `एक रुकी हुई जिंदगी`, `पराया शहर`
४) मांस का दरिया	- `युध्द`, `मांस का दरिया`, `दु:खों के रास्ते`, `दिल्ली में एक और मौत`,

कहानियों की विशेषताएँ --

`जोखिम` यह एक ऐसी कहानी है, जो एक ही समय महानगर की आर्थिक विषमता, बेकारी और मानसिक सुविधाओं के लिए तडपनेवाले व्यक्ति के आक्रोश को प्रकट करती है।

`आसक्ति` बहन की कमाईपर जीने वाले एक भाई की कहानी है। स्वयं को बहन के लिए बोझ समझने वाले विनोद की बेमानी जिन्दगी और शरम उन दोनों के भाई-बहन के रिश्ते की खोखला कर देती है। विनोद के मानसिक कुंठा का चित्रण बडा ही सशक्त हुआ है। नगरीय परिवेश में खून के रिश्ते भी किस प्रकार पराये बनते जाते है यह बात इस कहानी से स्पष्ट होती है।

`उस रात वह ... निकला था` यह कहानी महानगरीय परिवेश में होनेवाली संबंधों की निर्वैयक्तिकता को मार्मिक ढंग से चित्रित करती है। कमलेश्वर ने इस कहानी में बम्बई के ब्रीच कैण्डि के समुद्र किनारे का रात्रिकालिन चित्र हू-ब-हू पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

`अपना एकांत` यह बम्बई महानगर की पृष्ठभूमिपर लिखी ऐसी कहानी है, जिसमें बम्बई की प्रसिध्द चौपाटी का सुंदर वर्णन तो हुआ ही है, साथ ही लेखक ने कथानायक सोम की दुर्घटना और उसके बाद की घटनाओंद्वारा महानगरीय परिवेश में व्यक्ति की असुरक्षितता और कानुनी कामों में होनेवाली देरी से उत्पन्न भयावह स्थिति का यथार्थ वर्णन किया है।

`अजनबी` इस कहानी में यह दिखाया है कि, नौकरी पाने के लिए अपना गाँव छोडकर महानगर में आ जाने के बाद व्यक्ति महानगरीय परिवेश में अपने को `मिसफिट` समझकर एक अजनबी की तरह इधर उधर घुमता रहता है।

`बयान` कमलेश्वर की प्रसिध्द और बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी में लेखकने फोटोग्राफर की पत्नीद्वारा दिए गए बयान से उसके आत्महत्या के कारणों को बताकर हमारे प्रजातंत्र भारत में बेइमानी इमानदारी को किस कदर कुचलकर उसे आत्महत्या करनेपर मजबूर कर देती है यह बताया है।

' खोयी हुई दिशाएँ ' यह कहानी कमलेश्वर जी के निजी जीवन की कहानी है। इस एक कहानी में ही हम महानगर की यांत्रिकता, अकेलापन, परायापन आदि समस्याओं के विविध आयाम देख सकते हैं।

' दिल्ली में एक मौत ' इस कहानी में लेखक ने किसी के मौत हो जाने पर उसकी शवयात्रा में जानेवाले लोगों का व्यंग्य शैली में चित्रण कर गाँव तथा शहर की जिन्दगी में होनेवाले बुनियादी फर्क को ही रेखांकित किया है। यदि गाँव में किसी के पडोस में मौत हो जाती है तो लोग खाना तक नहीं बनाते लेकिन महानगर में हमें यह बात देखने नहीं मिलती।

' मांस का दरिया ' वेश्याओं के वास्तविक जीवन पर प्रकाश डालनेवाली एक सशक्त कहानी है। लेखक ने इसमें संभोग तक का वर्णन किया है, लेकिन कहीं भी अश्लिलता की बू नहीं आने दी। ढलती उम्र और बिमारियों से ग्रसित जर्जर वेश्या जुगनू की आर्थिक विवशता, निरुपायता और व्यथा का जीवंत चित्रण इस कहानी में हुआ है।

' कमलेश्वर की महानगरीय जीवन का चित्रण करने वाली कहानियों का अध्ययन करने के उपरान्त जो तथ्य हाथ आये उनकी चिकित्सा तीसरे और चौथे अध्याय में की गयी है।

कमलेश्वर ने महानगरीय जीवन को न सिर्फ जिया है, बल्कि उसे भोगा भी है। जिसके कारण उनकी कहानियों में प्रतिबिम्बित महानगरीय जीवन पाठकों को कुछ सोचनेपर मजबूर करने की क्षमता रखता है। कमलेश्वर की कहानियों में जो महानगरीय जीवन प्रतिबिंबित है वह इस प्रकार है ---

(१) पारिवारिक जीवन --

महानगरों में छोटे परिवारों की ओर अधिक प्रवृत्ति रहती है। इसका कारण यह है कि महानगर में रहने के लिए मकान आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाते। इसीलिए वहाँ रहनेवाले लोग संयुक्त परिवार बना कर नहीं रह सकते। वे लोग छोटे परिवार के साथ जहाँ भी जगह उपलब्ध हो वहाँ रहते है। इसके परिणाम स्वरुप हमें ग्रामिण जीवन में होने वाले संयुक्त परिवार की अपेक्षा छोटे-छोटे परिवारों का दर्शन ही महानगरीय जीवन में होता है। कमलेश्वर की कहानियों में इसका चित्रण खुलकर नही हुआ है।

(२) सामाजिक जीवन --

महानगरीय समाज और उसकी बहुविध विशेषताओं का विविध आयामों से सशक्त चित्रण कमलेश्वर ने महानगरीय कहानियों में किया है। महानगर में लोग एक दूसरे के प्रति व्यक्ति के समान नहीं, बल्कि वस्तु के समान व्यवहार करते है। इसी कारण महानगर में सामाजिक संबंधों में निर्वैयक्तिकता दिखायी देती है। सामाजिक संबंधों की निर्वैयक्तिकता और औद्योगिकरण के कारण महानगरीय लोगों का जीवन यंत्रवत् बन गया है। महानगर में मनुष्य घडी के साथ बँधा हुआ दिखायी देता है। इस यांत्रिकता के कारण मनुष्य का मानवपन कहीं खो गया है। महानगर में यांत्रिकीकरण तीव्र गति से होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरुप महानगरीय लोगों का जनजीवन इतना गतीशील हो गया है कि उसे एक-दूसरे की तरफ देखने की फुर्सत ही नहीं मिलती। महानगर में हर आदमीपर कोई न कोई लेबिल चिपकाया गया है। कोई डाक्टर है,कोई प्रोफेसर है,कोई मरीज है,कोई अमीर है तो कोई गरीब है, लेकिन मनुष्य कोई नहीं है। जिससे हम यह देखते है कि महानगरों में पडोसिपन की भावना कम हो गयी है। महानगरीय जीवन का यह अभिशाप कमलेश्वर की कहानियों में विविध संदर्भों में चित्रित हुआ है।

(३) महानगरीय जीवन --

होटल, क्लब,सिनेमा,कॉफी हाउस बार और नाइट क्लब आदि महानगरीय जीवन के अनिवार्य अंग ही है। इस अत्याधुनिक जीवन पध्दति को स्वीकारने वाले ` मौडर्न ` लोग तो इसे अपनी संस्कृति मानते है और उसे भरपूर रुप में जीते भी है। कमलेश्वर ने अपनी महानगरीय कहानियों में ऐसे स्थानों की चर्चा बहुत कम की है। उनकी एक मात्र कहानी ` सोयी हुई दिशाएँ ` में होटल ` गेलार्ड ` के वर्णन का अपवाद छोडकर बाकी सभी पात्र होटल,क्लब,बार,कॉफी हाउस आदि जगहपर अपने को अनुपयुक्त पाते है।

(४) आर्थिक जीवन --

महानगरों में लोग अपना गाँव छोड कर आर्थिक दशा में परिवर्तन लाने के हेतु आकर बसते हैं। इससे महानगर की लोकसंख्या में बढोतरी हुई, जैसे जैसे लोकसंख्या बढी वैसे-वैसे महँगाई भी बढती गई। आज महानगर में यह महँगाई आर्थिक विवशता के निचे दबे हुए व्यक्ति के जीवन की विडंबना बनी हुई है। बडे बडे उद्योगपति व्यापारी और राजनीतिक नेताओं के हाथ में आज महानगर की संपूर्ण अर्थव्यवस्था होने के कारण वे ही महानगर की चकाचौंध, सुख और ऐश्वर्य के समग्र साधनों का उपभोग लेकर चैन की जिन्दगी बीता सकते हैं। लेकिन आम आदमी इस विषम अर्थ व्यवस्था में अत्यंत त्रासदायक स्थितियों में पैसे-पैसे के लिए मोहताज बनकर पैसे के पीछे पडा नजर आता है। जिसके परिणाम स्वरुप इन्सान की नैतिक धारणाएँ भी बदल चुकी हैं। इससे उत्पन्न पीडा का कमलेश्वर ने अपनी कई कहानियों में चित्रण किया है।

महानगरीय जीवन का गहराई से अध्ययन करने के उपरान्त हम यह देखते हैं कि महानगरीय जीवन समस्याओं से भरपूर हैं। कमलेश्वर ने अपने कहानियों में महानगरीय परिवेश का यथार्थ चित्रण करके इन सभी समस्याओं को अपने कहानियोंद्वारा उद्घाटित किया है। कमलेश्वर की कहानियों में महानगर की प्रमुख रुप से दिखायी देने वाली सभी समस्याओं को स्पष्ट रुप से समझाने का प्रयास चतुर्थ अध्याय में किया गया है। कमलेश्वर के महानगरीय कहानियों में चित्रित हुयी समस्याएँ इस प्रकार है --

'गाँव और कस्बे को छोडने का दर्द' की समस्या कमलेश्वर की 'खोयी हुई दिशाएँ,' 'अजनबी', 'पराया शहर', 'जोखिम', 'एक रुकी हुई जिन्दगी' आदि कहानियों में चित्रित की है।

'महानगरीय जीवन : अलगाव और परायापन' की समस्या को 'खोयी हुई दिशाएँ', 'अपना एकांत', 'पराया शहर', 'अजनबी' आदि कहानियों में चित्रित हुयी है।

` महानगरीय जीवन : ऊब और एक रसता ` की समस्या को ` जोखिम `, ` आसक्ति `, ` मांस का दरिया `, ` एक थी विमला `, ` अपना एकांत `, ` पराया शहर ` आदि कहानियों में चित्रित किया है।

` महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपने छोटे पन का अहसास ` की समस्या ` जोखिम `, ` एक रुकी हुई जिन्दगी `, ` लाश ` और ` आसक्ति ` इन कहानियों में चित्रित हुयी है।

` महानगरीय परिवेश में व्यक्ति के जीवन की अनिश्चितता ` की समस्याओंको ` अपना एकांत ` और ` बयान ` इन कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

` महानगरीय जीवन में रिश्तों और संबंधों का थोथापन ` खोयी हुई दिशाएँ `, ` दिल्ली में एक मौत `, ` आसक्ति ` आदि कहानियोंद्वारा अभिव्यक्त किया है।

` महानगरीय जीवन में आर्थिक तंगी ` की समस्या को ` मांस का दरिया `, ` जोखिम `, ` आसक्ति `, ` बयान `, ` एक रुकी हुई जिन्दगी ` आदि कहानियों में चित्रित किया है।

` महानगरों में होनेवाली मकानों की समस्या ` को कमलेश्वरने ` आसक्ति `, ` जोखिम `, ` एक थी विमला `, आदि कहानियों में चित्रित किया है।

इस प्रकार हम देखते है कि कमलेश्वरने अपनी कहानियोंद्वारा पाठकों को महानगरीय जीवन, उसमें होने वाली तमाम समस्याओं से अवगत कराया है। उनकी कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन का प्रतिबिम्ब देखने से यह बात पूर्ण रुप से स्पष्ट हो जाती है कि महानगरीय जनजीवन दिनों-दिन पीडाओं, समस्याओंसे भरपूर बनता जा रहा है। इस चित्रण से एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि महानगरों की चकाचौंध खोखली है। जिसे देखकर महानगरों के प्रति निराशा की भावना ही मन में उत्पन्न हो जाती है।

अभाव --

कमलेश्वर की महानगरीय जीवन से संबंधित कहानियाँ महानगर की सभी समस्याओं से जुडी हुयी हैं। फिर भी महानगर की सबसे बडी और जटिल समस्या गंदी बस्तियों की है। जो कि हम बम्बई, दिल्ली आदि महानगरों में देख पाते है। कमलेश्वर बम्बई, दिल्ली आदि शहरों में रह तो चुके है लेकिन उन्होंने अपनी किसी कहानी में इन गंदी बस्तीयों का और उनकी ~~स्थित होनेवाली~~ समस्याओं का चित्रण नहीं किया है। यदि वह इसे स्पर्श करते तो उनके महानगरीय जीवन के चित्रण में परिपूर्णता आ जाती। महानगरीय जीवन के सभी पहलों को शत्-प्रतिशत् पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में सफलता आ जाती। इसके बावजूद भी उनकी महानगरीय कहानियों का मूल्यांकन करने पर हम यह कह सकते हैं कि कमलेश्वर इस एक-दो अभावों के बाद भी महानगरीय जीवन का समुचा चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में सफल हो चुके हैं।